CHAPTER 38

MUSIC

Doctoral Theses

429. अनीश कुमार

पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर की गायकी एवं रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. ओजेश प्रताप सिंह

Th 18839

सारांश

प्रत्येक काल का आकलन इतिहास के उस काल के रचनाकार और रचनाओं के माध्यम से किया जाता है। परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे जन्म लेते हैं कि जिनके सम्पूर्ण कार्य का मूल्यांकन उनके जीवित रहने के बाद भी होता रहता है ।उनका कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा एवं शोध का विषय बना रहा है। ऐसी ही महान् विभूतियों में से एक संगीत मार्तण्य पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर 'प्रणवरंग' जी भी हैं। पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर जी के वयक्तित्त्व की छाप और उनकी गायकी एवं रचनाओं का वर्णन किया है।

विषय सूची

1. पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर का जीवन परिचय। 2. पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर का सांगीतिक जीवन। 3.पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर का व्यक्तित्त्व। 4. पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर की बंदिशों का विश्लेषण। 5. पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर की गायकी का विश्लेषण। 6. पंडित ओमूकारनाथ ठाकुर के शिष्यों से साक्षात्कार-वार्ता। 7. उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

430. आम्रपाली

कथक नृत्यशैली में गायन की विभिन्न विधाओं की भूमिका।

निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

Th 18842

सारांश

कथक नृत्य के विशेष संदर्भ में विभिन्न गायन शैलियों के स्वरूप, भूमिका, नृत्य के साथ उसकी ऐतिहासिक संबद्धता तथा महत्व आदि तथ्यों का सविस्तार अध्ययन किया गया है ।

विषय सूची

1. कथक नृत्य का उद्भव एवं विकास। 2. कथक नृत्य में प्रयुक्त विभिन्न गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन। 3. कथक नृत्य में भावाभिनय हेतु विभिन्न गीत शैलियों का सांगीतिक अवलोकन। 4. कथक नृत्य शैली में प्रयुक्त गायन शैलियों में ताल एवं लय वैविध्य। 5. कथक नृत्य शैली से जुड़े कुछ विशिष्ट कलाकारों का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके विचार। 6. उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची।

431. चतुर्वेदी (माधव प्रसाद)

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की वर्तमान गेय विधाओं में पूर्ववर्ती गेय विधाओं के लुप्तप्राय तत्त्वों का विवेचन ।

निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

Th 18838

सारांश

इस संसार में मनुष्य, संस्कृति, सम्पदा, पराम्पराएँ, विरासत, ऐसे शब्द हैं जो प्रत्येक काल में किसी (के नाम) भी निमित्ति से बनते, बदलते, बुनते, सुलझते हुए एक-एक कड़ी जुड़ती-जुड़ती चली जाती है तो ऐसे में कुछ जुड़ता है कुछ छुटता है और कुछ इस जुड़ने और छुटने के बीच होता है जिसे शब्द नाम देना हमारे परिधि से बाहर दिखता है पर हम इसे लुप्त-विलुप्त, सुषुप्त-प्रसुप्त, परिष्कृत आदि जैसे संज्ञाओं से घेरने का प्रयास करते हैं ऐसा ही संगीत की व्यापकता लोकप्रियता लोकनेतृत्वता,

मनोभाव उद्दिप्तता से संदर्भ में परिकप्लित कर सकते हैं और यह परिकल्पना संगीत के शास्त्री उपशास्त्री मौलिक-लौकिक, अलौकिक परम्पराओं को परिलक्षित होते देखा समझा और सुधी संगीतज्ञों द्वारा बार-बार महसूस किया जाता है। प्रस्तुत शोध विषय में उपर्युक्त तथ्यों का अध्ययन किया है।

विषय सूची

1. वैदिक कालीन गेय विधाएँ। 2. गन्धर्व कालीन गेय विधाओं का वर्णन। 3. मतंग से संगीत रत्नाकर तक की गायन शैलियों का वर्णन। 4. मध्य एवं वर्तमान कालीन गेय विधाएँ। 5. वर्तमान गेय विधाओं में प्राचीन गेय विधाओं के लुप्तप्राय तत्त्वों का विवेचन। 6. उपसहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

432. ZAHRA CHITSAZ
Review on Illustrations in Children Literature.
Supervisor : Prof. Soumendra Nath Lahiri
Th 18916

Abstract

Reviewes the short history child's book in Iran and India. It is necessary for anyone who perform work for children must first understand their needs and be aware of features and desires of any age group so the plans his activities on these basis. Having knowledge in psychology of illustration and features of children's drawing & color psychology and its effects on mentality of child are groups of information that our illustrators must considered at the time creating the works. The art of illustrating is part of visual arts which is understood via visual sense and all visual works are formed by visual elements. These elements have dynamic relation with each other inside the work which for understanding them, its language must be know.

Contents

1. Introduction. 2. History of illustrating in Iran and India. 3. Psychology : Child, picture and color. 4. Vishual elements, design, techniques and styles in illustrating of children's book. 5. Concept of illustration in children books. 6. Outstanding illustrators : Iran and India. 7. Conclusion and bibliography.

433. जोशी (मुक्ता)

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गेय विधाओं में तान की भूमिका।

निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

Th 18841

सारांश

हमारे सांस्कृतिक जीवन में ललित कलाओं का विशिष्ट स्थान है ओर इन ललित कलाओं में भी संगीत का सर्वोच्य स्थान है। क्योंकि संगीत से प्राप्त होने वाला सुख ऐन्द्रिय न हो कर आत्मिक है । हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परंपरा अनादि काल से चली आ रही है । इसके विकास क्रम में जिस प्रकार अनेक गायन विधाएँ आई व कालक्रम से परिवर्तित होकर उन्होंने नवीन रूप लिया। उसी प्रकार अनेक सांगीतिक तत्व भी समयनुसार लुप्त हुए और उनका स्थान नवीन तत्वों ने ले लिया। परंपरा का निर्वाह हमारी प्राचीन धरोहर हे पर उसमें समयानुसार परिर्वतन आना भी स्वाभाविक है । संगीत के इस विकास क्रम में राग सौंदर्याभिव्यक्ति के आवश्यक तत्व ''तान'' की चर्चा अनिवार्य है । 'तान' शब्द की चर्चा पुराणों से लेकर वर्तमान समय तक हमें मिलती है । तान विधा का यद्यपि लोप तो किसी काल में नहीं हुआ तथापि तान के प्रायोगिक पक्ष पर दृष्टि डालें तो हमें पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगोचर होगी। भारतीय संगीत में तान की इस महत्त्वता के कारण तान का आद्योपांत अध्ययन करने का प्रयास किया है।

विषय सूची

1. भूमिका। 2. तान का ऐतिहासिक पक्ष। 3. तान का आधुनिक पक्ष। 4. ख्याल गायन में विविध घरानों के संदर्भ में तान। 5. उपशास्त्रीय संगीत। 6. उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची।

434. दास (शाम्भवी)

उस्ताद विलायत हुसैन ख़ाँ की गायकी एवं बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. ओजेश प्रताप सिंह

Th 18837

सारांश

शोध-कार्य में आगरा घराने के उस्ताद विलायत हुसैन ख़ाँ साहब के शिष्यों द्वारा प्राप्त उनकी बंदिशें, उनकी गायन शैली, उनके कृतित्व के विषय में जानकारी दी है। आगरा घराना एवं ग्वालियर घराने के उद्‌गम एवं विकास, दोनों में सम्बंध एवं इनके अंतर्गत गुरू-शिष्य परम्परा, आगरा घराने की गायकी एवं गायकों पर प्रकाश डाला है। 'उस्ताद विलायत हुसैन ख़ाँ' के जीवन परिचय, सांगीतिक यात्रा तथा उनकी सांगीतिक उपलब्ध्यिाँ, उनके शिष्यगण का यथोचित वर्णन करने का प्रयास किया है। विलायत हुसैन ख़ाँ साहब की गायकी का वृहद विश्लेषण करने का प्रयास किया है। उत्तम रचनाकार के रूप में उस्ताद विलायत हुसैन ख़ाँ साहब के रचना पक्ष को प्रस्तुत किया है।

विषय सूची

1. आगरा घराना की परम्परा। 2. उस्ताद विलायत हुसैन ख़ाँ साहब का जीवन परिचय। 3. उस्ताद विलायत हुसैन ख़ाँ साहब की गायकी के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण। 4. उस्ताद विलायत हुसैन ख़ाँ साहब द्वारा रचित बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। 5. उपसंहार एवं संदर्भ-ग्रंथ सूची ।

435. दीपक कुमार

भारतीय शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष में पाश्चात्य वाद्यों की भूमिका : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. राजीव वर्मा

Th 18835

सारांश

किसी भी देश की संस्कृति की धरोहर उस देश का संगीत होता है। भारतीय संगीत विश्व संगीत विश्व संगीत में श्रेष्ठ माना गया है। प्राचीन समय में जब अंग्रेज भारत आए तो वे अपने साथ अपने संगीत व अपने वाद्य भी लेकर आए। जब वे लगातार कई वर्षों तक भारत में रहे तो भारतीय संगीतकारों का रूझान भी उनके संगीत एवं वाद्यों में होने लगा । परंतु यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य जिस परम्परा, संस्कृति में जन्म लेता है, फलता फूलता है उसी में अधिक आनन्द की अनुभूति करता है । परिणामस्वरूप भारतीय कलाकारों ने उनके पाश्चात्य वाद्य अपनाए व

उनमें परिवर्तन कर उनका भारतीयकरण किया। अधिकाधिक पाश्चात्य वाद्यों की जानकारी का विवरण दिया गया है।

विषय सूची

1. भारतीय वाद्यों का उद्भव एवं विकास। 2. पाश्चात्य वाद्यों का उद्भव एवं विकास। 3. पाश्चात्य वाद्यों की भारतीय संगीत में भूमिका। 4. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में पाश्चात्य वाद्यों के प्रमुख कलाकार। 5. कर्नाटक संगीत में पाश्चात्य वाद्यों के प्रमुख कलाकार। 6. उपसंहार, परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

436. बग्गा (पुष्पा)

कुमाऊँनी रामलीलाओं के विशेष संदर्भ में शास्त्रीय संगीत के तत्वों का विवेचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी

Th 19102

सारांश

कुमाऊँनी रामलीलाओं में छिपे शास्त्रीय संगीत के विभिन्न तथ्यों को उभारने का प्रयास किया गया है । कुमाऊँ के ऐतिहासिक विवेचन के अन्तर्गत उसके भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजवंशीय पृष्ठभूमि पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है। रामलीला परंपरा के विशेष ऐतिहासिक संदर्भों पर दृष्टिपात करते हुए उसके शब्दार्थ, अभिप्राय, उसके विभिन्न प्राकर एवं कुमाऊँ से जुड़े अन्य स्थलों पर प्रदर्शित की जाने वाली रामलीलाओं का संक्षिप्त विवरण दिया गया है । कुमाऊँ रामलीलाओं में प्रयुक्त रचनाओं के सांगीतिक मूल्यांकन से सम्बन्धित है, जिसमें विभिन्न रागों में निबद्ध रचनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । कुमाऊँ लोकगीतों, पौराणिक रामलीलाओं एवं आधुनिक रामलीलाओं में प्रयोग की गई विभिन्न तालों का परस्पर विश्लेषण इस अध्याय के अन्तर्गत किया गया है।

विषय सूची

1. कुमाऊँ का संक्षिप्त ऐतिहासिक विवेचन एवं लोकगीतों की दृष्टि से क्षेत्रीय विभाजन। 2. कुमाऊँनी रामलीलाओं का भौगोलिक स्वरूप एवं उनमें प्रयुक्त विभिन्न

रचनाओं का काव्यात्मक अवलोकन। 3. कुमाऊँनी रामलीलाओं में प्रयुक्त विभिन्न रचनाओं का सांगीतिक मूल्यांकन। 4. कुमाऊँनी लोकसंगीत एवं रामलीलाओं में प्रयुक्त तालें एवं विभिन्न वाद्य। 5. उपसंहार, संदर्भ ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट।

437. बिष्ट (पूर्णा)

आधुनिकता के प्रभाव से कुमाऊँनी लोक संगीत का बदलता स्वरूप : ऋतु गीत के विशेष संदर्भ में।

निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल

Th 18845

सारांश

कुमाऊँ में सर्वाधिक ''ऋतु गीत'' गाये जाते है। क्योंकि मुख्य रूप से चैत और फागुन के महीने में ही लोक जीवन एकत्रित होकर सभी प्रकार के कुमाऊँनी लोकगीतों का आनन्द उठाते हैं । विज्ञान की उन्नति से परम्परागत संस्कारों को बड़ी चोट पहुँची है। कई संस्कार तो लुप्त ही हो गये है। संस्कारों का प्रचलन रूका तो संस्कार गीत भी समाप्त हुए । तथा भगनौल बैर, घणेली, रमौल की समाप्ति हुई। आधुनिकता के प्रभाव से परम्परागत गीतों का प्रचलन धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है । स्टूडियो रिकार्डिंग एवं आधुनिक वाद्यों को लेकर प्रतिदिन नये-नये प्रयोग किये जा रहे है। अब गीतों में परम्परागत वाद्यों का प्रयोग कम मिलता है। कुछ विद्वान इसे लोक संगीत का विकास मानते हैं, तो कुछ का कहना है कि यह संस्कृति का हनन है । यह कहाँ तक सही है अथवा गलत इस पर चर्चा की गई है। आधुनिक गीतों की पारम्परिक गीतों की अपेक्षा लोकप्रियता अधिक बढ़ती जा रही है। आधुनिक गीतों में आधुनिक तकनीकी तथा वाद्यों का विशेष प्रयोग किया जा रहा है। इस प्रकार परम्परागत गीत तथा आधुनिक लोक गीतों का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण एवं इनकी विशेषताओं की चर्चा की गई है ।

विषय सूची

1. भूमिका। 2. कुमाऊँनी ऋतु सम्बन्धी गीत। 3. कुमाऊँनी पारम्परिक लोक गीत। 4. पारम्परिक लोक गायक। 5. कुमाऊँनी लोक गीतों पर ब्रज भाषा, हिन्दी भाषा, नेपाली भाषा तथा सीमान्त देश (नेपाल-तिब्बत) प्रदेशों के संगीत का प्रभाव। 6. कुमाऊँनी प्रचलित-अप्रचलित वाद्य प्रकार। 7. उपसहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

438. महतोलिया (दीपा)
कुमाऊँनी लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का वैदिक परिपेक्ष्य में अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा विष्ट
Th 18840

सारांश

लोक संस्कृति का कुबेर कहे जाने वाले कुमाऊँ क्षेत्र के एक सुसंस्कृत परिवार में जन्म लेने के कारण मेरे परिवार का सम्पूर्ण परिवेश सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न रहा है। परिवार का सांस्कृतिक परिवेश होने एवं धार्मिक प्रवृति होने के कारण मैं बाल्यकाल से जहाँ घर में आयोजित होने वाले वैदिक अनुष्ठानों की दृष्टी रही वहीं मैंने कई जागरों, पूजा-अर्चनाओं सहित विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान किया। कुमाऊँ की लोक संस्कृति में सम्पन्न होने वाली अनेकानेक सांस्कृतिक गतिविधियों में दृष्टित होने वाले वैदिक प्रभाव का विस्तारसे अध्ययन किया है।

विषय सूची

1. भूमिका। 2. वैदिक कालीन लोक जीवन के परिपेक्ष्य में कुमाऊँ का लोक स्वरूप। 3. कुमाऊँनी लोकगीत प्रकारों की विवेचना। 4. कुमाऊँनी लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का वैदिक परिपेक्ष्य में अध्ययन। 5. उपसंहार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

439. MAHMOUD MOUSAI SANJAREHEI
Reviewing Iran and India Common Artistic Aspects of Indian Miniature in Safavieh Arena.
Supervisor : Prof. M. Vijayamohan
Th 18917

Abstract

Meanings of miniature, material and workshop techniques and characteristics of miniature painting including anatomy of the face, perspective composition, color, etc. have been studied. Viewpoint and opinions of some contemporary researchers have been considered.

Contents

1. Introduction. 2. A brief history of miniature painting in Iran

and India. 3. The role of Iranian and Indian kings in the development of minature. 4. Characteristics of miniatures. 5. Mughal - Indian style, herat and shiraz - Iranian styles. 6. Conclusion and bibliography.

440. VISHAL

Contribution of Audio-Visual Recording Studio for Promoting Indian Music.

Supervisor : Prof. Sunita Dhar

Th 18918

Abstract

The main objective of this work is to know how Audio-Vishual recording studio technology is promoting Indian music. Describes different genres of music in our country like classical, semi classical, folk music, religious music, film music, fusion music etc. Mention about studio, its architect and the essential equipments required at recording studio. Explain how music was being promoted in olden time i.e. Guru Shishya Parampara, court music, folk music, music at sacred places etc.

Contents

1. Indian music and its historical development. 2. Different forms of Indian music. 3. Recording studio, architect and equipments. 4. Audio visual recording technology. 5. Promotion of music. 6. Contribution of audio-visual recording studio for promoting Indian music. 7. Interviews. Conclusion, bibliography and appendix.

441. शर्मा (ओम)

हिमाचल प्रदेश की संगीत-जीवी जातियाँ इतिहास, वर्तमान स्थिति तथा भविष्य : एक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास

Th 18843

सारांश

हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत का परिचय देते हुए हिमाचल प्रदेश की विभिन्न सांगीतिक लोक विधाओं, गायन विधा, नृत्य विधा, लोक नाट्य विधा तथा देव संगीत परम्परा की जानकारी दी गई है। हिमाचल प्रदेश की संगीत-जीवी का ऐतिहासिक

परिचय दिया गया है। सम्बन्धित जाति द्वारा बजाये जाने वाले मुख्य पारम्परिक वाद्यों जैसे - ढोल, नगाड़ा, शहनाई, करनाल, रणसिंगा, घड़ा, खंजरी, रूबाना, बांसुरी इत्यादि वाद्धों का विस्तृत परिचय दिया गया है । हिमाचल की संगीतजीवी जाति की वर्तमान स्थिति के बारे में लिखा गया है । इसी जाति से सम्बन्ध रखने वाले संगीत निर्देशक श्री मास्टर लच्छीराम, श्री पंडित सुन्दर लाल गन्धर्व, श्री डॉ. कृष्णलाल सहगल, श्री हेत राम तनवार, श्रीमति गम्भरि देवी तथा श्रीमति कमलारानी का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया गया है। मंगलामुखी जाति द्वारा हिमाचल के विविध उत्सवों तथा संस्कारों में वाद्यों पर बजाई जाने वाली तालों की स्वरलिपियां दी गई है।

विषय सूची

1. हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत का परिचय। 2. हिमाचल प्रदेश की संगीत-जीवी जातियाँ-इतिहास व परिचय। 3. हिमाचल प्रदेश की संगीत-जीवी जातियों द्वारा बजाए जाने वाले वाद्य। 4. हिमाचल प्रदेश की संगीत-जीवी जातियों की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य। 5. तूरी जाति के कुछ प्रमुख कलाकारों का जीवन परिचय। 6. हिमाचल की लोक विधाओं में वाद्यों पर बजाई जाने वाली तालें । 7.उपसंहार, चित्रावली एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

442. शर्मा (राजेश कुमार)
उपशास्त्रीय संगीत की गेय विधाओं पर शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. नूपुर राय चौधरी
Th 18834

सारांश

शोध प्रबंध के अन्तर्गत उपशास्त्रीय संगीत की गेय विधाओं का ऐतिहासिक अध्ययन है तथा इन पर शास्त्रीय संगीत की विधाओं के प्रभाव को बताया गया है। संगीत का अर्थ, परिभाषा एवं उत्पत्ति सम्बन्धित तथ्य प्रस्तुत करते हुए क्रमिक विकास को बताया गया है । साथ ही साथ शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आने वाली विधाओं जैसे प्रबंध, ध्रुवपद, ख़्याल तथा तराना शैलियों का वर्णन है।

विषय सूची

1. संगीत की उत्पत्ति, इतिहास एवं शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आने वाली शैलियाँ। 2. उपशास्त्रीय संगीत : अर्थ, उत्पत्ति एवं शैलियाँ। 3. उपशास्त्रीय संगीत की गेय विधाओं पर शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन। 4. उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची।

443. शर्मा (श्वेता)

ब्रज के रासान्वयी संगीत का परिवर्तनात्मक स्वरूप : एक अध्ययन आधुनिक काल के विशिष्ट संदर्भ में ।

निर्देशिका : प्रो. मधुबाला सक्सैना

Th 18844

सारांश

रास एक सिद्धांत है, जीवन का दर्शन है, जिससे सृष्टि का कण-कण स्पंदित होता है। रासलीला के वास्तविक स्वरूप के दर्शन केवल वैष्णव दृष्टिकोण में ही निहित है जोकि भक्तों के लिए अपने आध्यात्मिक मौलिक स्वरूप में ही उपासनीय है। यह रस की लीला है, रस के समूह की लीला है । इसके नायक श्री कृष्ण स्वयं तो रस रूप हैं ही, इसके आस्वादक रसिक भी वे ही हैं तथा इसी रस की सृष्टि हेतु वह एक से दो होते हैं। रासलीला का प्रयोजन ही रस-सृष्टि है। मूल रूप में रासलीला में रस ही रस का भोक्ता है । उपासना के क्षेत्र में इस रस का आस्वादक भक्त साधक होता है, जो सहचरी भाव रख कर लीला रस का आश्रम ग्रहण करता है। भक्ति रस में इस रस की सार्थकमा स्वयं सिद्ध है। रास और रस के इसी रहस्य का विश्लेषण इस शोध में किया है।

विषय सूची

1. भूमिका। 2. रास। 3. रासाव्वयी संगीत के स्वरूप में निहित शास्त्रीय संगीत की गेय विधाएँ। 4. ब्रज के रासान्वयी संगीत में प्रयुक्त वाद्य। 5. रासान्वयी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न राग एवं ताल। 6. रास के तीन रूप। उपसंहार, सन्दर्भ ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट।

444. शैलेन्द्र कुमार

20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचित प्रमुख ग्रन्थों का समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

Th 19101

सारांश

प्राचीनकाल में संगीत एवं उस समय के प्रमुख सांगीतिक ग्रन्थों में संगीत सम्बन्धी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। संगीत का मध्यकाल एवं उसके प्रमुख ग्रंथों में संगीत संबंधी विषयों की संक्षिप्त चर्चा की गई है । आधुनिक काल में संगीत की दशा पर चर्चा की गई है। 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचित ग्रंथों के ग्रंथकारों में पं. भातखण्डे, पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पं. सुदर्शनाचार्य, पं. ओमकारनाथ, पं. विनायक राव पटवर्धन, आचार्य रातंजनकर, श्रीमान फॉक्स स्ट्रैंग्वेज, श्रीमान ई. क्लेमेन्ट्स तथा श्रीमान एच. ए. पोपले का परिचय दिया गया है।

विषय सूची

1. संगीत का प्राचीन काल एवं उसके प्रमुख ग्रंथों में संगीत सम्बन्धी विषयों की संक्षिप्त चर्चा। 2. संगीत का मध्यकाल एवं उसके प्रमुख ग्रंथों में संगीत सम्बन्धी विषयों की संक्षिप्त चर्चा। 3. संगीत का आधुनिककाल एवं 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचित प्रमुख सांगीतिक ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय। 4. 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचित प्रमुख सांगीतिक ग्रंथों के ग्रंथकारों का परिचय। 5. 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचित प्रमुख सांगीतिक ग्रंथों का समीक्षात्मक अध्ययन। उपसंहार एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची।

445. सोवरा (सोम्बुरू)

आधुनिक डिजाईन और विज्ञापन कला में जनजातीय कलाओं का प्रयोगः प्रेरणा श्रोत के रूप में ।

निर्देशक : प्रो. एस. एन. लाहिड़ी

Th 18836

सारांश

भारत की विभिन्न जनजातियों के इतिहास व उनके परिचय का वर्णन किया है ।

जनजातियों के एक सामान्य ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक व अन्य परिचयों और उनके द्वारा बनाए गए आरंभिक चित्रों का अध्ययन किया है।

विषय सूची

1. भारतीय जनजातियाँ : एक सामान्य परिचय। 2. जनजातीय कलाओं का परिचय। 3. आधुनिक विज्ञापन कला व डिजाईन में जनजातीय कला का प्रयोग। 4. आधुनिक डिजाईन में विज्ञापन कला व जनजातीय कला का क्रमिक विकास व अध्ययन। 5. आधुनिक डिजाईन और विज्ञापन कला की सफलता के लिए आवश्यक तत्व। 6. आधुनिक डिजाईन और विज्ञापन कला के विकास से आए जनजातीय कलाओं पर प्रभाव। 7. आधुनिक विज्ञापन निर्माता व कलाकार और उपभोक्ता पर जनजातीय कला का प्रभाव, कारकों का अध्ययन उपरोक्त तथ्यों के संदर्भ में। 8. उपसंहार एवं परिशिष्ट।